

औषधीय पौधों का डिजिटल संग्रह एवं QR Code आधारित जन-जागरूकता

स्थानीय प्रकृति से डिजिटल ज्ञान तक – DIET Dehradun की एक अभिनव पहल

Rakhi Pandey, DIET Dehradun



Scan Here

उत्तराखण्ड अपनी समृद्ध जैव-विविधता, वन-संपदा और परंपरागत औषधीय ज्ञान के लिए जाना जाता है। हमारे आसपास अनेक ऐसे पेड़-पौधे और वनस्पतियाँ मौजूद हैं जिनका उपयोग पीढ़ियों से स्वास्थ्य, घरेलू उपचार और दैनिक जीवन में किया जाता रहा है। लेकिन बदलती जीवनशैली और शहरीकरण के कारण नई पीढ़ी इन पौधों को देखकर पहचान नहीं पाती और इनके पारंपरिक महत्व से भी धीरे-धीरे दूर होती जा रही है।

इसी आवश्यकता को ध्यान में रखते हुए DIET Dehradun द्वारा “औषधीय पौधे एवं वनस्पतियाँ-संग्रह 1.0, 2026” के रूप में एक उपयोगी डिजिटल प्रयास किया गया है। इसमें उत्तराखण्ड के औषधीय एवं उपयोगी पौधों को डिजिटल माध्यम से व्यवस्थित रूप में प्रस्तुत किया गया है। यह संग्रह 38 स्लाइडों के माध्यम से उपलब्ध है और इसे ऑनलाइन देखा जा सकता है।

इस पहल की विशेषता केवल पौधों की जानकारी एकत्र करना नहीं है, बल्कि स्थानीय जैव-विविधता को डिजिटल तकनीक से जोड़कर सार्वजनिक रूप से सुलभ बनाना है।

प्रकृति की प्रत्येक वनस्पति को बनाएं Digital Learning Resource

कल्पना कीजिए कि किसी विद्यालय, DIET परिसर, पार्क, औषधीय उद्यान अथवा सार्वजनिक स्थल पर कोई विद्यार्थी या नागरिक किसी पौधे को देखता है। सामान्यतः वह उसका नाम जानने के लिए किसी विशेषज्ञ से पूछेगा या इंटरनेट पर खोज करेगा।

लेकिन यदि उसी पौधे के पास एक छोटा-सा QR Code लगा हो तो केवल मोबाइल फोन से उसे स्कैन करते ही उस पौधे की पूरी डिजिटल जानकारी सामने आ सकती है।

इस QR Code को एक डिजिटल पेज से जोड़ा जा सकता है, जहाँ पौधे का स्थानीय नाम, हिन्दी नाम, वैज्ञानिक नाम, फोटो, पहचान, प्राकृतिक आवास, उत्तराखण्ड में उपलब्धता, पारंपरिक उपयोग, संरक्षण संबंधी जानकारी तथा आवश्यक सावधानियाँ उपलब्ध हों।

इस प्रकार QR Code वास्तविक पौधे और डिजिटल ज्ञान के बीच एक Digital Bridge का कार्य करता है।

“Scan – Learn – Explore” मॉडल

इस पहल को पूरे उत्तराखण्ड में एक सरल मॉडल के रूप में आगे बढ़ाया जा सकता है—

देखिए → QR Code स्कैन कीजिए → पौधे को पहचानिए → उसके बारे में जानिए → आसपास खोजिए → संरक्षण कीजिए।

विद्यालयों में विद्यार्थी अपने आसपास पाए जाने वाले औषधीय एवं उपयोगी पौधों की पहचान कर सकते हैं। शिक्षक विद्यार्थियों के साथ मिलकर उनकी प्रमाणित जानकारी एकत्र कर सकते हैं और प्रत्येक पौधे का एक छोटा डिजिटल पेज तैयार कर सकते हैं।

इसके बाद उस पेज का QR Code बनाकर संबंधित पौधे के पास लगाया जा सकता है।

इस गतिविधि को केवल विज्ञान विषय तक सीमित रखने की आवश्यकता नहीं है। सामाजिक विज्ञान के विद्यार्थी पौधे से जुड़े स्थानीय इतिहास और परंपराओं को खोज सकते हैं; भाषा के विद्यार्थी स्थानीय नाम और लोककथाएँ संकलित कर सकते हैं; कला के विद्यार्थी पौधों के चित्र बना सकते हैं; और ICT के विद्यार्थी वेबसाइट, QR Code, फोटो, वीडियो और डिजिटल डेटाबेस तैयार कर सकते हैं।

इस प्रकार एक पौधा स्वयं में बहुविषयी Learning Resource बन सकता है।

उत्तराखण्ड का Community Medicinal Plant Digital Repository

इस पहल का अगला चरण और भी व्यापक हो सकता है।

DIET, विद्यालय, शिक्षक और विद्यार्थी मिलकर अपने आसपास के औषधीय पौधों का **Geo-tagged Digital Repository** तैयार कर सकते हैं। प्रत्येक पौधे के डिजिटल रिकॉर्ड में उसका फोटो, स्थान, स्थानीय एवं वैज्ञानिक नाम, संक्षिप्त परिचय और QR Code जोड़ा जा सकता है।

भविष्य में इन सभी स्थानों को एक डिजिटल मानचित्र से जोड़ा जा सकता है। कोई व्यक्ति देहरादून, अल्मोड़ा, पौड़ी, टिहरी या उत्तरकाशी जैसे क्षेत्रों को चुनकर यह देख सके कि उसके आसपास कौन-कौन से महत्वपूर्ण औषधीय पौधे दर्ज किए गए हैं।

इस प्रकार विद्यालय और DIET केवल शिक्षण संस्थान नहीं रहेंगे, बल्कि **स्थानीय जैव-विविधता के Digital Knowledge Centres** के रूप में भी विकसित हो सकते हैं।

विद्यार्थियों से जनता तक

इस पहल का सबसे महत्वपूर्ण पक्ष इसका सार्वजनिक उपयोग है।

औषधीय पौधों का डिजिटल संग्रह एवं QR Code आधारित जन-जागरूकता

स्थानीय प्रकृति से डिजिटल ज्ञान तक – DIET Dehradun की एक अभिनव पहल

उत्तराखण्ड अपनी समृद्ध जैव-विविधता, वन-संपदा और परंपरागत औषधीय ज्ञान के लिए जाना जाता है। हमारे आसपास अनेक ऐसे पेड़-पौधे और वनस्पतियाँ मौजूद हैं जिनका उपयोग पीढ़ियों से स्वास्थ्य, घरेलू उपचार और दैनिक जीवन में किया जाता रहा है। लेकिन बदलती जीवनशैली और शहरीकरण के कारण नई पीढ़ी इन पौधों को देखकर पहचान नहीं पाती और इनके पारंपरिक महत्व से भी धीरे-धीरे दूर होती जा रही है।

इसी आवश्यकता को ध्यान में रखते हुए **DIET Dehradun द्वारा “औषधीय पौधे एवं वनस्पतियाँ-संग्रह 1.0, 2026”** के रूप में एक उपयोगी डिजिटल प्रयास किया गया है। इसमें उत्तराखण्ड के औषधीय एवं उपयोगी पौधों को डिजिटल माध्यम से व्यवस्थित रूप में प्रस्तुत किया गया है। यह संग्रह 38 स्लाइडों के माध्यम से उपलब्ध है और इसे ऑनलाइन देखा जा सकता है।

इस पहल की विशेषता केवल पौधों की जानकारी एकत्र करना नहीं है, बल्कि **स्थानीय जैव-विविधता को डिजिटल तकनीक से जोड़कर सार्वजनिक रूप से सुलभ बनाना** है।

प्रकृति की प्रत्येक वनस्पति को बनाएं Digital Learning Resource

कल्पना कीजिए कि किसी विद्यालय, DIET परिसर, पार्क, औषधीय उद्यान अथवा सार्वजनिक स्थल पर कोई विद्यार्थी या नागरिक किसी पौधे को देखता है। सामान्यतः वह उसका नाम जानने के लिए किसी विशेषज्ञ से पूछेगा या इंटरनेट पर खोज करेगा।

लेकिन यदि उसी पौधे के पास एक छोटा-सा **QR Code** लगा हो तो केवल मोबाइल फोन से उसे स्कैन करते ही उस पौधे की पूरी डिजिटल जानकारी सामने आ सकती है।

इस QR Code को एक डिजिटल पेज से जोड़ा जा सकता है, जहाँ पौधे का **स्थानीय नाम, हिन्दी नाम, वैज्ञानिक नाम, फोटो, पहचान, प्राकृतिक आवास, उत्तराखण्ड में उपलब्धता, पारंपरिक उपयोग, संरक्षण संबंधी जानकारी तथा आवश्यक सावधानियाँ** उपलब्ध हों।

इस प्रकार QR Code वास्तविक पौधे और डिजिटल ज्ञान के बीच एक **Digital Bridge** का कार्य करता है।

“Scan – Learn – Explore” मॉडल

इस पहल को पूरे उत्तराखण्ड में एक सरल मॉडल के रूप में आगे बढ़ाया जा सकता है—

देखिए → QR Code स्कैन कीजिए → पौधे को पहचानिए → उसके बारे में जानिए → आसपास खोजिए → संरक्षण कीजिए।

विद्यालयों में विद्यार्थी अपने आसपास पाए जाने वाले औषधीय एवं उपयोगी पौधों की पहचान कर सकते हैं। शिक्षक विद्यार्थियों के साथ मिलकर उनकी प्रमाणित जानकारी एकत्र कर सकते हैं और प्रत्येक पौधे का एक छोटा डिजिटल पेज तैयार कर सकते हैं।

इसके बाद उस पेज का QR Code बनाकर संबंधित पौधे के पास लगाया जा सकता है।

इस गतिविधि को केवल विज्ञान विषय तक सीमित रखने की आवश्यकता नहीं है। सामाजिक विज्ञान के विद्यार्थी पौधे से जुड़े स्थानीय इतिहास और परंपराओं को खोज सकते हैं; भाषा के विद्यार्थी स्थानीय नाम और लोककथाएँ संकलित कर सकते हैं; कला के विद्यार्थी पौधों के चित्र बना सकते हैं; और ICT के विद्यार्थी वेबसाइट, QR Code, फोटो, वीडियो और डिजिटल डेटाबेस तैयार कर सकते हैं।

इस प्रकार एक पौधा स्वयं में **बहुविषयी Learning Resource** बन सकता है।

उत्तराखण्ड का Community Medicinal Plant Digital Repository

इस पहल का अगला चरण और भी व्यापक हो सकता है।

DIET, विद्यालय, शिक्षक और विद्यार्थी मिलकर अपने आसपास के औषधीय पौधों का **Geo-tagged Digital Repository** तैयार कर सकते हैं। प्रत्येक पौधे के डिजिटल रिकॉर्ड में उसका फोटो, स्थान, स्थानीय एवं वैज्ञानिक नाम, संक्षिप्त परिचय और QR Code जोड़ा जा सकता है।

भविष्य में इन सभी स्थानों को एक डिजिटल मानचित्र से जोड़ा जा सकता है। कोई व्यक्ति देहरादून, अल्मोड़ा, पौड़ी, टिहरी या उत्तरकाशी जैसे क्षेत्रों को चुनकर यह देख सके कि उसके आसपास कौन-कौन से महत्वपूर्ण औषधीय पौधे दर्ज किए गए हैं।

इस प्रकार विद्यालय और DIET केवल शिक्षण संस्थान नहीं रहेंगे, बल्कि **स्थानीय जैव-विविधता के Digital Knowledge Centres** के रूप में भी विकसित हो सकते हैं।

विद्यार्थियों से जनता तक

इस पहल का सबसे महत्वपूर्ण पक्ष इसका सार्वजनिक उपयोग है।

QR Code आधारित जानकारी विद्यालय परिसर, औषधीय उद्यान, पार्क, पंचायत भवन, पर्यटन स्थल अथवा अन्य उपयुक्त सार्वजनिक स्थानों पर उपलब्ध कराई जा सकती है। इससे विद्यार्थी, शिक्षक, स्थानीय नागरिक और पर्यटक सभी अपने मोबाइल फोन से पौधों की जानकारी प्राप्त कर सकेंगे।

विद्यार्थियों के लिए यह गतिविधि **Experiential Learning, Project-Based Learning, ICT Integration और Environmental Education** का उत्कृष्ट उदाहरण बन सकती है।

साथ ही विद्यार्थियों में अपने स्थानीय पर्यावरण के प्रति जिज्ञासा और संरक्षण की भावना भी विकसित होगी।

यह पहल स्थानीय बुजुर्गों और समुदाय के पारंपरिक ज्ञान को भी डिजिटल रूप में संरक्षित करने का अवसर प्रदान करती है। हालांकि औषधीय उपयोग संबंधी जानकारी को विशेषज्ञ अथवा विश्वसनीय स्रोतों से सत्यापित करना आवश्यक होगा और इसे चिकित्सकीय परामर्श के विकल्प के रूप में प्रस्तुत नहीं किया जाना चाहिए।

हमारी परिकल्पना

**“हर महत्वपूर्ण पौधे की अपनी डिजिटल पहचान हो,
हर पौधे के साथ उसका QR Code हो,
और उत्तराखण्ड की स्थानीय जैव-विविधता का ज्ञान
हर विद्यार्थी और नागरिक के मोबाइल तक पहुँचे।”**

DIET Dehradun का यह डिजिटल संग्रह इस दिशा में एक महत्वपूर्ण प्रारंभिक कदम बन सकता है। इसे विद्यालयों, DIETs और स्थानीय समुदायों की सहभागिता से आगे बढ़ाते हुए भविष्य में **“Digital Medicinal Plant Map of Uttarakhand”** अथवा **“QR-enabled Uttarakhand Herbal Knowledge Repository”** के रूप में विकसित किया जा सकता है।

इस प्रकार परंपरागत ज्ञान और आधुनिक डिजिटल तकनीक का सुंदर समन्वय होगा—जहाँ प्रकृति हमारी प्रयोगशाला होगी, पौधे हमारे Learning Resources होंगे और QR Code ज्ञान तक पहुँचने का डिजिटल द्वार बनेगा।

संदेश

Scan the Plant – Know the Plant – Explore Local Biodiversity – Preserve Uttarakhand's Green Knowledge.

“स्थानीय पौधों को पहचानें, उनके ज्ञान को डिजिटल बनाएं और उत्तराखण्ड की जैव-विविधता को आने वाली पीढ़ियों के लिए संरक्षित करें।”



Scan Here

QR Code आधारित जानकारी विद्यालय परिसर, औषधीय उद्यान, पार्क, पंचायत भवन, पर्यटन स्थल अथवा अन्य उपयुक्त सार्वजनिक स्थानों पर उपलब्ध कराई जा सकती है। इससे विद्यार्थी, शिक्षक, स्थानीय नागरिक और पर्यटक सभी अपने मोबाइल फोन से पौधों की जानकारी प्राप्त कर सकेंगे।

विद्यार्थियों के लिए यह गतिविधि **Experiential Learning, Project-Based Learning, ICT**

Integration और Environmental Education का उत्कृष्ट उदाहरण बन सकती है।

साथ ही विद्यार्थियों में अपने स्थानीय पर्यावरण के प्रति जिज्ञासा और संरक्षण की भावना भी विकसित होगी।

यह पहल स्थानीय बुजुर्गों और समुदाय के पारंपरिक ज्ञान को भी डिजिटल रूप में संरक्षित करने का अवसर प्रदान करती है। हालांकि औषधीय उपयोग संबंधी जानकारी को विशेषज्ञ अथवा विश्वसनीय स्रोतों से सत्यापित करना आवश्यक होगा और इसे चिकित्सकीय परामर्श के विकल्प के रूप में प्रस्तुत नहीं किया जाना चाहिए।

हमारी परिकल्पना

हमारी परिकल्पना है—

“हर महत्वपूर्ण पौधे की अपनी डिजिटल पहचान हो,
हर पौधे के साथ उसका QR Code हो,
और उत्तराखण्ड की स्थानीय जैव-विविधता का ज्ञान
हर विद्यार्थी और नागरिक के मोबाइल तक पहुँचे।”

DIET Dehradun का यह डिजिटल संग्रह इस दिशा में एक महत्वपूर्ण प्रारंभिक कदम बन सकता है। इसे विद्यालयों, DIETs और स्थानीय समुदायों की सहभागिता से आगे बढ़ाते हुए भविष्य में **“Digital Medicinal Plant Map of Uttarakhand”** अथवा **“QR-enabled Uttarakhand Herbal Knowledge Repository”** के रूप में विकसित किया जा सकता है।

इस प्रकार परंपरागत ज्ञान और आधुनिक डिजिटल तकनीक का सुंदर समन्वय होगा—जहाँ प्रकृति हमारी प्रयोगशाला होगी, पौधे हमारे Learning Resources होंगे और QR Code ज्ञान तक पहुँचने का डिजिटल द्वार बनेगा।



Scan the Plant – Know the Plant – Explore Local Biodiversity – Preserve Uttarakhand's Green Knowledge.

“स्थानीय पौधों को पहचानें, उनके ज्ञान को डिजिटल बनाएं और उत्तराखण्ड की जैव-विविधता को आने वाली पीढ़ियों के लिए संरक्षित करें।”